पाठ : 3

अतीत में दबे पाँव

प्रश्न: 1 सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। कैसे?

उत्तर: 1. **संपन्न सिंधु सभ्यता :**

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा दोनों प्राचीन सिंधु सभ्यता के अवशेष हैं। मोहनजोदड़ो वर्तमान पाकिस्तान के सिंधु प्रांत में है और हड़प्पा पंजाब प्रांत में है। मोहनजोदड़ो विश्व का सबसे प्राचीन नियोजित शहर था। यह 200 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला था। संपूर्ण शहर वास्तुकला की दृष्टि से पूर्ण नियोजित था। वह भवनों, बंद नालियों, विभिन्न वस्तुओं, मकानों के जो अवशेष मिले हैं, वे उस काल की अत्यंत विकसित व सभ्यता को प्रदर्शित करते हैं।

आडंबर का अभाव :

विकसित व संपन्न सभ्यता होने पर भी यहाँ के मोहल्ले व धर्मतंत्र के प्रति मंदिरों, मूर्तियों आदि के कोई दिखावा नहीं है जबकि यहाँ पर राज-व्यवस्था भी थी और धार्मिक अनुष्ठान भी होते थे, लेकिन उनमें आडंबरों का पूर्ण अभाव था।

प्रश्न : 2 सिंधु - सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य - बोध है, जो राज - पोषित या धर्म - पोषित न होकर समाज - पोषित था। ऐसा क्यों कहा गया ?

उत्तर : 2 सौंदर्य बोध :

सिंधु सभ्यता में कला को अधिक महत्व दिया गया है, यहाँ कि वास्तुकला अनुपम है। इसके अतिरिक्त धातु व पत्थर की मूर्तियाँ मिट्टी के बर्तन, ऊपर चित्रित छवियाँ, सुनिर्मित मोहरें खिलौने, केश विन्यास आभूषण, सुघड़ अक्षरों की लिपि आदि सिंधु सभ्यता के कला - पक्ष के सौंदर्य को प्रदर्शित करते हैं। इसलिए एक महान पुरातत्व वेत्ता ने कहा है - सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य बोध है।

समाज - पोषित सौंदर्य बोध :

प्राचीन सभ्यताओं में मुख्यतः राजाओं के संरक्षण में कला का विकास होता था। कहीं - कहीं धार्मिक आस्था से भी कला का सृजन होता है, लेकिन सिंधु सभ्यता न तो पोषित है और न धर्म पोषित। उसके पोषण में समाज के हर वर्ग का हाथ था। वह समाज के लोगों द्वारा समाज के लिए पोषित थी।

प्रश्न : 3 पुरातत्व के किन चिन्हों के आधार पर आप यह कह सकते हैं, कि "सिंधु - सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।

उत्तर: पुरातत्व के चिन्ह :

मोहनजोदड़ो में सिंधु - सभ्यता के जो भी चिह्न मिले हैं उनसे ज्ञात होता है, कि वह एक श्रेष्ठ व विकसित सभ्यता थी। भवनों के अवशेष, भवनों का नियोजन, वास्तुकला मूर्तिकला, चित्रकला आदि में जो सौंदर्य है, उससे वहा के समाज का बौद्धिक स्तर ज्ञात होता है।

समस्त से अनुशासित सभ्यता :

सिंधु सभ्यता में सर्वत्र कला का साम्राज्य दिखाई देता है। कहीं पर भी ताकत व प्रभुता के प्रतिक चिन्ह नहीं पाए गए। किसी भी चित्रावली में राजा अथवा बलशाली व्यक्ति को चाटुकारिता या पूजा करते लोग नहीं दिखाए है। यहाँ औजार तो मिले हैं हथियार नहीं।

प्रश्न: "यह सच है, कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आप को कहीं नहीं ले जाती; वे आकाश की तरफ अधूरी रह जाती हैं, लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है, कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं उस के पार झाँक रहे हैं।" इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय है?

दुनिया की छत :

मोहनजोदड़ो में किसी आँगन की सीढ़ियाँ ऊपर को जाती दिखती हैं, जो टूटी-फूटी हालत बयान करती हैं, कि कभी इन सीढ़ियों

से दूसरी मंजिल पर जाते थे, लेकिन आज यह चुनसान बतनों में आकाश की तरफ ताकती प्रतीत होती है।

इतिहास के उस पार :

लेखक के अनुसार सिंधु सभ्यता इतिहास की सीमा से भी परे है। वहाँ का शहर नियोजन इतना विकसित था, कि आज का शहर नियोजन उसके सामने फीका पड़ जाता है। सिंधु सभ्यता में प्राप्त कलाकारी अद्वितीय व बेजोड़ है। इसलिए यह इतिहास से परे की सभ्यता है।

प्रश्न : टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए सत्यों का भी दस्तावेज़ होते हैं — इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : टूटे-फूटे खंडहर :

सिंधु सभ्यता व संस्कृति के प्रति टूटे-फूटे खंडहर इनमें विद्यमान कमरों के अवशेष, स्नानागार, पानी निकासी के लिए ढकी हुई नालियाँ, घरों के बीच-बीच में गलियाँ, सड़कें, कूए आदि केवल पुरानी बस्तियों के दृश्य ही नहीं थे। अपितु वे अपने काल की कहानी को मौन भाषा में कह रहे हैं।

धड़कती जिंदगी के अनछुए सत्य :

खंडहर धड़कती जिंदगी के अनछुए सत्यों के दस्तावेज लेखक के अनुसार यह

हैं। सूक्ष्म दृष्टि से दिखाई देता है, कि कभी इनमें काफी चहल - पहल रही होगी।

प्रश्नः इस पाठ में ऐसे स्थान का वर्णन है, जिसे बहुत कम लोगों ने देखा होगा, परंतु इससे आपके मन में उस नगर की एक तस्वीर बनाती है। किसी ऐसे ऐतिहासिक स्थल, जिनको आपने नज़दीक से देखा हो, का वर्णन अपनों शब्दों में कीजिए।

उत्तरः पाठ में आए स्थान का वर्णन :
पाठ में मोहनजोदड़ो ऐसे स्थान का वर्णन है, जहाँ पर प्राचीन सभ्यता के अवशेष विद्यमान हैं। ये स्थान हमने देखा नहीं है, इसकी अंकित तस्वीरों से हमें आभास होता है।

ऐतिहासिक स्थल जो हमने देखा है :
हमने कई ऐतिहासिक स्थल देखे हैं, जिसमें महरौली का प्राचीन स्थल देखने के बाद संस्मरण करने योग्य है। यहाँ पर पृथ्वीराज चौहान के प्राचीन महल के अवशेष आज भी खंडहर के रूप में विद्यमान हैं, वहीं पर कुतुबमीनार भी है। उसके बगल में एक अधूरी मिनार के अवशेष हैं, अशोक के युग का लौहस्तंभ भी यहीं पर है।

प्रश्नः नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है, कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल - संस्कृति कह सकते हैं? आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क दें।

उत्तर : **सिंधु घाटी की नगर तथा जल व्यवस्था :**

सिंधु घाटी की नगर योजना को देखकर आधुनिक विद्वान दंग रह जाते हैं। यहाँ पर भवनों, गलियों आदि का निर्माण तथा स्नानागार, पानी की निकासी आदि की व्यवस्था बहुत ही व्यवस्थित तरीके से की गई है।

जल - संस्कृति :

हम सिंधु - घाटी सभ्यता को जल - संस्कृति कह सकते हैं, क्योंकि यह पानी की निकासी नदी, कुएँ, स्नानागार आदि की बेजोड़ व्यवस्था थी। मोहनजोदड़ो के कुओं के बारे में विद्वान कहते हैं, कि यह विश्व की पहली ज्ञात संस्कृति है, जो कुएँ खोदकर भू - जल तक पहुँची थी।

SCHOOL IN-CHARGE
Vidhya Vihar School, Biaora
Dise Code- 23300227812